हिंदी विवि में संविधान दिवस पर व्याख्यान
संविधान एक क्रांतिकारी घोषणापत्र - डॉ. एम. एल. कासारे
भाषण प्रतियोगिता में विवादित थे ने रखे भिया

वर्ष, 26 नवंबर 2016: भारतीय संविधान में परिवर्तन का व्याख्या है और यह एक क्रांतिकारी घोषणापत्र है। संविधान में दी गयी व्यवस्था के अनुसार भारत में मूल्यव्यवस्था स्थापित होनी चाहिए। संविधान नये भूमियों का दस्तावेज है जिसमें समाज को गतिमान करने की वात कही गयी है। अब विवाद जाने-माने विवादक प्रो. एम. एल. कासारे, वर्ण ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में शनिवार, 26 नवंबर को

भारतीय संविधान दिवस पर राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से 'भारतीय संविधान एवम सामाजिक-आर्थिक जीवन' विवाद पर समस्त भावन में आयोजित व्याख्यान में वर्तन मुख्य वक्ता बोल रहे थे। कार्यक्रम की अभ्यक्ता विश्वविद्यालय के प्रतिकूलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने की।

भारत के संविधान को लेकर भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, मूल्य व्यवस्था आदि वालों को जिक बताए हुए प्रो. कासारे ने अपने सारगिर्द एवं विद्यार्थियों में बताए कि डॉ. गायाज्ञ साहिब अवंडकर ने संविधान को बनाते
समय भारत की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को ध्यान में रखा था और इसका जिक्र उन्होंने 1931 की गोलमेज परिषद में ही किया था। उन्होंने कहा कि दो वर्ष ग्यारह महीने और 17 दिन में तैयार हुए संविधान का प्रोजेक्ट छह हजार पत्रों का था और भारत के जात इतिहास में इसका अलग-ही महत्व है। उन्होंने कहा कि राजनीति में एक व्यक्ति एक मत और एक मूल्य जिसप्रकार लागू है इसीप्रकार सामाजिक और आर्थिक जीवन में एक भी एक व्यक्ति एक मूल्य की व्यवस्था लागू होनी चाहिए। राजनीतिक जलंत्र की तरह सामाजिक और
आर्थिक जनतंत्र को मजबूत करने की अपेक्षा डॉ. अंबेडकर ने संविधान में की है। परंतु इस दिशा में अनेक प्रकार की चुनौतियां और समस्याएं आ रही है जिसे हमें जुड़ना पड़ रहा है। उन्होंने अपेक्षा व्यक्त की कि हमें संस्कृति कबूल करने के साथ ही संस्कृति बनानी होगी।

कल्चर के निर्माण की ओर आगे जाना चाहिए और इसके लिए ऊच्च शिक्षा संस्थानों को प्रयास करने चाहिए। डॉ. कासारे ने अपने वक्तव्य में डॉ. अंबेडकर द्वारा संविधान निर्माण के समय उठाए गये भूमिकाएँ, जैसे जनतंत्र, पानी और विज्ञान के संबंध की चर्चा कर के संविधान के केंद्र में व्यक्ति को रखा गया है। देश के विकास के लिए युवाओं को आगे आने का आहवान भी उन्होंने किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रतिकूलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि संविधान ही लोकतंत्र का मूल आत्मा है।
समतामूलक समाज की स्थापना की परिकल्पना संविधान में लिखित है और हम इस दिशा में आगे भी बढ़ रहे हैं। उन्होंने संविधान के निर्माण से उसके लागू होने तक के घटनाक्रम का विस्तार से लिख अपने यमकर्त्व में किया और कहा कि डॉ. अंबेडकर जैसे विद्वान ने इसे कठी मेहनत से तैयार कर देश को सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण दस्तावेज सृष्टि है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों का पाँथा देखकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजक सहायक प्रोफेसर राजेश लेखापुरे ने किया तथा आभार जनसंपर्क अधिकारी डू. राजेश कुमार ने माना। इस अवसर पर डॉ. सुरसुत शल्यक, डॉ. विश्वास प्रसाद, प्राध्यापक पदमाकर वारास्कर सहित शोधाध्यक्ष एवं विद्यार्थी ने नयी संध्या में उपस्थित थे। त्यहां के बाद विद्वानों के लिए ‘संविधान और हमारे कर्तव्य’ विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें विद्वानों ने अपने विचार रखे। भाषण प्रतियोगिता में परीक्षक के रूप में डॉ. और सहायक प्रोफेसर शैलेश मरजी कदम उपस्थित थे।